IJAER/January-Feburary 2015 /Volume-4/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

प्रकृतिः वर्णनम इति महादेवीः वर्माः कार्यम

डॉ गोविंद राम चरोरा,

संस्कृत विभाग, महारानी श्री जया महाविद्यालय

भरतपुर, राज

सार

महादेवी वर्मा छायावाद की एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। छायावाद का युग उथल – पुथल का युग था। राजनीतिक , सामाजिक , सांस्कृतिक , आर्थिक आदि सभी स्तरों पर विभ्रम , द्वंद्व , संघर्ष और आंदोलन इस युग की विशेषता थी। इस पृष्ठभूमि में , अन्य संवेदनशील कवियों के समान ही , महादेवी ने भी अपनी रचनाशीलता का उपयोग किया। महादेवी अपनी काव्य रचनाओं में प्रायः अंतर्मुखी रही है। अपनी व्यथा , वेदना और रहस्य भावना को ही इन्होंने मुखरित किया है। उनकी कविता का मुख्य स्वर आध्यात्मिकता ही अधिक दिखाई देता है यद्यपि उनकी गद्य रचनाओं में उनका उदार और सामाजिक व्यक्तित्व काफी मुखर है। हम यह कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा का काव्य प्रासाद इन चार स्तम्भों पर अवस्थित है – वेदनानुभूति , रहस्य भावना , प्रणयभावना और सौंदर्यानुभूति यदि हम यह कहे कि महादेवी वर्मा के काव्य का मूल भाव प्रणय है तो यह अतिश्योक्ति नही होगी , उनकी कविताओं में उदात प्रोम का व्यापक चित्रण मिलता है। अलौकिक प्रिय के प्रति प्रणय की भावना , नारी सुलभ संकोच और व्यक्तिगत तथा आध्यात्मिक विरह की अनुभूति उनके प्रणय के विविध आयाम हैं। महादेवी के काव्य में सौंदर्य के विविध रूपों का मनोहर चित्रण हुआ है। उनकी सौंदर्यानुभूति विलक्षण है। महादेवी वर्मा सौंदर्य को सत्य की प्राप्ति का साधन मानती है। छायावादी कवि चतुष्टय में महादेवी वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। आगामी अंशों में हम महादेवी वर्मा की काव्यात्मक विशेषताओं पर विस्तार से अध्ययन करेंगे

मुख्यशब्दः *छायावाद का युग , प्रकृति चित्रण*

परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई . में उत्तर प्रदेश के जनपद फर्रूखाबाद में एक सुशिक्षित मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। पिता श्री गोविन्द प्रसाद एम . ए . एल . एल . बी . की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद मुख्याध्यापक के रूप में कार्यरत थे और माता हेमरानी देवी भी शिक्षित और धार्मिक विचारों वाली कुशल गृहिणी थी। अपनी आरंभिक शिक्षा इन्होंने घर पर ही पूरी की। अध्ययन के साथ ही संगीत और चित्रकला में भी इनकी प्रारंभ में ही रुचि रही है। नौ वर्ष की अल्पायु में ही इनका विवाह भी रूपनारायण वर्मा से हुआ। फलस्वरूप इंदौर से वे अपने ससुराल प्रयाग में आ गई। वहीं पर इन्होंने मिडिल से लेकर एम . ए . संस्कृत तक की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। अपनी शैक्षणिक योग्यता के कारण एम . ए . पास करते ही प्रयाग महिला विद्यापीठ के प्राचार्य का पद मिला। इन्होंने अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया। असमय वैधव्य जीवन ने महादेवी को आत्मलीन , शांत और एकांकी अवश्य बनाया लेकिन इनका बहिर्मुखी व्यक्तित्व अत्यंत उदार , मिलनसार और परहित विशेष रूप से दीन – दुखियों की सेवा – सहायता की भावना से ओतप्रोत

था। ' श्रृंखला की कड़िया ' शीर्षक निबंध संग्रह ' अतीत के चलचित्र ' और ' स्मृति की रेखाएं ' जैसे संस्मरणों और रेखाचित्रों में इनके बहिर्मुखी व्यक्तित्व की अत्यंत जीवंत अभिव्यक्ति हुअ है। लेकिन इनकी कविताओं में वेदना , करूणा और अकेलेपन की आत्मशीलता ही अधिक व्यक्त हुई है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही महादेवी के काव्य का मूल्यांकन करना उचित होगा।

उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्जरभाषा ब्रजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहित की भाँति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ[4] कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। वे पशु पक्षी प्रेमी थी गाय उनको अति प्रिय थी ।[5] वर्ष 2007 उनका जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था। गूगल ने इस दिवस की याद में वर्ष 2018 में गूगल डूडल के माध्यम से मनाया

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। में नीहार, में रश्मि, में नीरजा, तथा में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। सन में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की और पं इलाचंद्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का सम्पादन संभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नीव रखी।[11] इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ।

वे हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध पन्थ से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव से उन्होंने जनसेवा का व्रत लेकर झूसी में कार्य किया और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया। 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बंगला बनवाया था। जिसका नाम उन्होंने मीरा मन्दिर रखा था। जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। शृंखला की कड़ियाँ में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज़ उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निन्दा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया।[16] महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-

सुधारक भी कहा गया है।[17] उनके सम्पूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है

महादेवी वर्मा का योगदान

साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ीबोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिन्दी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्त्वपूर्ण काम किया जिसने आनेवाली एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया। शचीरानी गुर्टू ने भी उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है।उन्होंने अपने गीतों की रचना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है। छायावादी काव्य की समृद्धि में उनका योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्त्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव-हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावादी कवियों में उन्हें 'महादेवी' बनाता है वे हिन्दी बोलने वालों में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति दृढ़ता से परिपूर्ण होते थे। वे दिल्ली में में आयोजित तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण में उनके इस गुण को देखा जा सकता है।

यद्यपि महादेवी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उनके लेख, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, भूमिकाओं और ललित निबंधों में जो गद्य लिखा है वह श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें जीवन का सम्पूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना और काव्यरूपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढ़कर ही जाना जा सकता है। उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता इतनी है कि वह आज भी प्रासंगिक है समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में दृढ़ता और विकास का अनुपम सामंजस्य मिलता है। सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने ही पहली बार हिंदी साहित्य को दिये।

मौलिक रचनाकार के अलावा उनका एक रूप सृजनात्मक अनुवादक का भी है जिसके दर्शन उनकी अनुवाद-कृत 'सप्तपर्णा' में होते हैं। अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे उन्होंने वेद, रामायण, थेरगाथा तथा अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके ३९ चयनित महत्वपूर्ण अंशों का हिन्दी काव्यानुवाद इस कृति में प्रस्तुत किया है। आरम्भ में ६१ पृष्ठीय 'अपनी बात' में उन्होंने भारतीय मनीषा और साहित्य की इस अमूल्य धरोहर के सम्बंध में गहन शोधपूर्ण विमर्ष किया है जो केवल स्त्री-लेखन को ही नहीं हिंदी के समग्र चिंतनपरक और ललित लेखन को समृद्ध करता है।

उद्देश्य

1. महादेवी वर्मा छायावाद की एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं।

2. महादेवी के काव्य में सौंदर्य के विविध रूपों का मनोहर चित्रण हुआ है।

महादेवी की कविता में रहस्य भावना

जब छायावादी कवियों की और उनमें भी विशेषकर महादेवी वर्मा की बात आती है तो रहस्यवाद की चर्चा अनिवार्य हो जाती है। हम ऊपर यह निवेदन कर चुके हैं कि छायावाद का युग उथल - पुथल संक्रमण और लगभग प्रत्येक स्तर का संघर्ष और विभ्रम का युग था। एक अर्थ में द्वंद्व इस काल का प्रधान गुण था और मिथ का द्वंद्व भी , वर्तमान और अतीत का द्वंद्व था तो वास्तिवकता और अध्यात्म का द्वंद्व था। इस अंतिम द्वंद्व ने विशेष रूप से छायावादी रचनाकार को रहस्यवाद की ओर मोड़ दिया। महादेवी के संदर्भ में कुछ आलोचक व्यक्तिगत एकांकीपन और अभाव को भी रहस्यानुभूति का कारण मानते हैं जो भी , हो महादेवी और रहस्यवाद एक - दूसरे के पर्याय बन गए हैं।

महादेवी वर्मा की रहस्य भावना की विवेचना में रहस्यवाद के पारंपरिक अर्थ को समझने का प्रयास करें।चिंतन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है , भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।

व्यष्टि सौंदर्य - दृष्टि छायावाद है और समष्टि सौंदर्य दृष्टि रहस्यवाद।

रहस्यवाद जीवात्मा की उस अंतर्निहित प्रवृति का प्रकाशन है , जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्छल संबंध जोड़ना चाहती है और यह संबंध यहां तक बढ़ जाता है कि दोनों में केाई अंतर नही रह जाता। काव्य में आत्मा की मूल अनुभूति की मुख्य धारा रहस्यवाद है।

महादेवी वर्मा की कविताओं में रहस्यानुभूति की उपस्थिति का आंकलन करें तो भी यही प्रमाणित होता है कि वह सर्वत्र और प्रत्येक उपादान तथा प्रकृति - व्यापार में एक विराट सत्ता के दर्शन होते हैं वह उसके साथ तादात्म्य , साक्षात्कार को व्याकुल दिखाई देती है। यहीं से उनके काव्य में रहस्य की सृष्टि होती है। वह स्वयं को प्रकृति का ही अंग मानकर उस दिव्य सत्ता से मिलन को तत्पर रहती है। महादेवी का मूर्त और अमूर्त जगत एक - दूसरे से इस प्रकार मिले हुए हैं कि एक यथार्थवादी दूसरे को रहस्यदृष्टा बनकर ही पूर्णता पाता है उनका नारी होना इस रहस्यवाद को और भी गहन करता है वे एक रागात्मक संबंध स्थापित करती है। उस परम पुरुष के साथ जब असीम से हो जाएगा मेरी लघु सीमा का मेल यही आत्म समर्पण उनका पावन लक्ष्य है। महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति पर यदि हम सतर्क दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनके काव्य में रहस्यवाद के सभी चरणों की अभिव्यंजना हुई है। उनमें कौतुहल और जिज्ञासा रहस्यानुभूति का सबसे पहला चरण होता है। मानव किसी चकित शिशु - सा जब ब्रहाण्ड के विराट लीला व्यापार को देखता है तो वह बस चकित होकर रह जाता है और जब उसकी बुद्धि कोई भी व्याखय प्रस्तुत नही कर पाती तो वह रहस्य में डूब जाता है किस शिल्पी ने अनजान / विश्व प्रतिमा कर दी निर्माण ' महादेवी भी चकित हो सोचती है और प्रश्न करती है -

प्रथम प्रणय की सुषमा सा। यह कलियों की चितवन में कौन ? चकित मानव को हर ओर एक परम सत्ता के ही दर्शन होते हैं और वह उनकी एक झलक पाने को आतुर रहता है। महादेवी वर्मा ने भी प्रकृति के विविध उपादानों में इस औकिक प्रियतम को ही देखा है और इन्हीं को देखकर उसके अपार सौंदर्य की कल्पना की।

चितवन तन श्याम रंग। इन्द्रधनुष भृकुटि भग , विद्युत का अंग रांग दीपित मृदु – मृदु अंग – अंग। उड़ता नभ में अछोर। तेरा नव नील चीर महादेवी वर्मा एक रहस्यवादी कवि के रूप में केवल अद्वैतवाद से बंध कर नहीं चलती। वह प्रियतम के साथ एकाकार तो हो जाना चाहती है – तुम मुझमें प्रिय। फिर परिचय क्या। चित्रित तू मैं हूँ रेखा क्रम। जब छायावादी रहस्यवाद की बात करते है तो हम उसकी युगीन विशेषताओं को अनदेखा नही कर सकते। विभिन्न स्तरो पर पराधीनता की बेडियों में जकड़े समाज के लिए यह मोटे तौर पर मुक्ति – संघर्ष का युग था दो विश्वयुद्धों के मध्यांतर का यह काल राष्ट्रीय चेतना के उत्कर्ष का काल है। छायावाद का युग महात्मा गांधी की सक्रियता , किसान , आंदोलन , प्रथम विश्व युद्धोत्तर स्थितियों , विश्व व्यापी आर्थिक संकट , श्रमिक हड़तालों , विद्रोही तेवर आदि का काल था।

महादेवी की कविता में प्रणय की अनुभूति

प्रणय की अनुभूति में छायावादी कविता को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। छायावाद का काव्य भारतीय नारी के नवोत्थान का काव्य था , जब वह समाज में बराबरी का दर्जा पाने के लिए संघर्ष कर रही थी , अपने पारम्परिक रूढ़िगत बंधनों को तोड़ने का यत्न कर रही थी और पुरुष की व्यावहारिक सहचरी बनने की दिशा में अग्रसर हो रही थी। उधर पुरुष को भी यह लगने लगा था कि स्त्री को उसके विशुद्ध रूप में समझा जाना चाहिए। स्त्री – पुरुष संबंध इस यंग में अपने लिए नए आयामों की खोज करता दिखाई देता है। महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम एक मूल भाव के रूप में प्रकट हुआ है उनका प्रेम अशरीरी है। यह करूणा से आप्लावित प्रेम है अलौकिक दिव्य सता के प्रति उनकी इस प्रणयानुभूति में दाम्पत्य प्रेम की झलक भी मिलत है और लौकिक स्पर्श का आभास भी। महादेवी की कविता में व्यक्त प्रेम इसलिए भी विशिष्ट है क्योंकि वह एक स्त्री की लेखनी से किया गया स्त्री – मनोभावों का चित्रण है। उनमें स्त्रयोचित्त लाज – संकोच है तो अपने युग की नवजागृत नारी का अहं भी है वह विरह की भाग में तपती है तो संयोग की छांह से भी स्वयं को दूर नहीं रखना चाहती। इस प्रकार उन्होंने प्रणय की विविध स्थितियों का भरपूर आनंद लेते हुए अपनी कविताओं में इनका गहन चित्रण किया है।

महादेवी वर्मा सहज प्रेम

उनकी कविता का मूल भाव है। उन्होंने प्रेम के मधुर रूप का चयन किया क्योंकि माधुर्य को वह प्रेम को महत्वपूर्ण गुण मानती है। हृदय के अनेक रागात्मक संबंधों में माधुर्यमूलक प्रेम ही उस सामंजस्य तक पहुंच सकता है जो सब रेखाओं में रंग भर सके ; सब रूपों को सजीवता दे सके और आत्म निवेदन को इष्ट के साथ समता के धरात पर खड़ा कर सके। यहां छायावादी साहचर्य का भाव द्रष्टव्य है।

महादेवी ने प्रकृति के उपकरणों में जिस सौंदर्य के दर्शन किए , उसी से उनका प्रणयानुभूति का उदभव हुआ और इसी विराट सौंदर्य के प्रति वह अपने प्रणयोद्गार व्यक्त करती रही। सौंदर्य तो प्रेम का प्रेरक होता है। फिर अपार , अथाह , असीम सौंदर्य किससे हृदय का प्रणय से उद्वेलित नहीं कर देगा। महादेवी में अपने इस आलौकिक प्रिय से मिलने की तीव्र इच्छा है वह कहती है -

महादेवी की कविता में सौंदर्य चित्रण

सौंदर्य भावना छायावाद की एक महत्वपूर्ण प्रवृति है। महादेवी ने न केवल इसे अंगीकार किया अपितु अपने काव्य में इसे महत्वपूर्ण चिताकर्षक रूपाकार देकर समाहित भी किया। उन्होंने सौंदर्य के सूक्ष्म रूप को प्रतिष्ठित और चित्रित किया। उनकी सौंदर्य दृष्टि प्रकृति और मानव दोनों की ओर आकृष्ट होती है।

' सौंदर्य की उदभाविका ' महादेवी वर्मा सौंदर्य की अदभूत चितेरी है। उन्होंने अखिल ब्रहाण्ड में सौंदर्य के दर्शन किए हैं और इस अनुभूति से गुजरते हुए उन्होंने इसके विविध रूपों का चित्रांकन अपनी लेखनी से किया। उनका काव्य सौंदर्य की खान है और उनके गीतों में सौंदर्य के विविध रूपों की छवियां बिखरी पड़ी हैं। महादेवी वर्मा के काव्य में प्राप्त उस विराट सत्ता , प्रकृति और नारी के सौंदर्य पर ही दृष्टिपात करेंगे।

महादेवी ने सर्वत्र एक विराट सत्त के दर्शन किए हैं। इसी अरूप पुरुष का दिव्य सौंदर्य उन्हें आकृष्ट करता है और वे उसी के चिर - सौंदर्य से प्रभावित होकर उसका गुणगान करती है। यह सौंदर्य उन्हें प्रकृति के प्रत्येक उपकरण , प्रत्येक उपादान में दिखाई देता है। इसलिए प्रकृति की सुषमा का वर्णन उनके संदर्भ में एक परम प्रिय के सौंदर्य का वर्णन है। महादेवी की सौंदर्यानुभूति में रहस्यात्मकता की उपस्थिति दिखाई पड़ती ही है। छायावाद का जन्म जिन कारणों से हुआ उनमें एक प्रमुख कारण यह था कि छायावादी दृष्टि ने मनुष्य और प्रकृति के बीच औद्योगिक - व्यावसायिक प्रगति को छायावाद ने प्रकृति पर मनुष्य की विजय घोषित करने का विरोध किया। प्रकृति के प्रति छायावादी दृष्टि ' कौतुहल और रागात्मकता ' से भरी रही। स्वयं महादेवी कहती है - छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिए जो प्राचीन काल से बिम्ब - प्रतिबिम्ब में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ती थी। छायावाद की प्रकृति घट , कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई। अब मनुष्य के अश्रु , मेघ के जलकण और पृथ्वी के ओस बिंदुओं का एक ही कारण , एक ही मूल्य है। प्रकृति के लघु तृण और महान वृक्ष , कोमल कलियां और कठोर शिलाएं अस्थिर जल और स्थिर पर्वत , निविड अंधकार और उज्ज्वल विद्युत रेखा , मानव की लघुता - विशालता , कोमलता - कठोरता , चंचलता - निश्चलता और मोह - ज्ञान का केवल प्रतिबिम्ब न होकर एक ही विराट से उत्पन्न सहोदर है। महादेवी क्योंकि प्रकृति के समस्त उपकरणों समस्त व्यापारों में उस दिव्य सौंदर्य के ही दर्शन करती है , इसलिए उन्होने प्रकृति के सभी उपादानों , सभी रूपों का चित्रण अपनी कविताओं में किया है।

महादेवी क्योंकि प्रकृति के प्रत्येक उपकरण , प्रत्येक रूप में उस दिव्य पुरुष के सौंदर्य के ही दर्शन करती है। इसलिए प्रकृति का केाई भी रूप उन्हे विचलित नही करता। उन्ही के अनुसार प्रकृति का शांत रूप जैसे मेरे हृदय में एक चंचल लय सी भर देता है। उसका रौद्र रूप वैसे ही आत्मा को प्रशासंत स्थिरता देता है। अस्थिरता रौद्रता की प्रतिक्रिया ही संभवतः मेरी एकाग्रता का कारण रहती है। निकट आंधी , तूफान , बादल , समुद्र आदि कुछ ऐसे विषय हैं जिनके चित्र अनायास बनते हैं और बना लेने पर स्थायी आनंद प्राप्त होता है। महादेवी ने अपनी व्यक्तिगत प्रणयानुभूति और वेदनाभूति की अभिव्यक्ति के लिए भी प्रकृति का सहारा लिया। जो कुछ वह सीधे - सीधे अप्रत्यक्ष रूप में नही कह सकती थी , प्रकृति का अवरण ले लेने पर वही सब कुछ वह अतयंत सहज सरल ढंग से कह जाती है।

महादेवी वर्मा तथा छायावादी कवियों के प्रकृति चित्रण की एक अनूठी विशेषता यह रही कि उन्होंने प्रकृति पर नारी रूप का आरोप किया। वह चाहे प्रसाद हो , सुमित्रानंदन पंत का आरोपण किया। वह चाहे प्रसाद हो , सुमित्रानंदन पंत या फिर निराला – सभी प्रकृति की सुंदरता में किसी स्त्री स्वरूप की कल्पना से बढ़कर और कौन सी कल्पना होगी। महादेवी वर्मा भी इसका अपवाद नही है। बल्कि छायावाद युग में स्त्री की नव प्राप्त छवि और स्वतंत्रता से पे्ररित होकर , स्वयं स्त्री होने के नाते महादेवी ने नारी मुक्ति की चेतना को कही अधिक सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। महादेवी सौंदर्य की उदभाविता है। उनके काव्य में दिव्य पुरुष , प्रकृति , नारी के माध्यम से सौंदर्य को अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी कविताओं में चित्रित सौंदर्य स्थूल न होकर सूक्ष्म और आंतरिक सौंदर्य है।

महादेवी के काव्य में विभिन्न प्रतीक

शब्द दो प्रकार के होते हैं वाचक शब्द और प्रतीकात्मक। वाचक शब्दों का संबंध केवल अभिधा शक्ति से होता है। जबकि प्रतीकात्मक शब्दों का संबंध लक्षणा और व्यंजना से होता है। साहित्य मनीषी वैदिक साहित्य और उपनिषद् काल की रचनाओं मंे प्रतीकों की उपस्थिति बताते हैं। इसके अतिरिक्त महाभारत , पुराण , नागपंथी हठयोगियों की बानियों , अमीर खुसरों की मुकेरियों तथा विद्यापति सूर , कबीर , निराला और प्रसाद तक में प्रतीकों का प्रयोग देखने को मिलता है।

महादेवी के आकार प्रतीक को एक सिद्ध शिल्पी मिला। महादेवी ने माया के लिए दर्पण और आत्मा के लिए दीपक जैसे प्रकृति प्रेमी होने के कारण अपने प्रतीक भी प्रकृति से उठाती है। उन्होंने प्रकृति के प्रत्येक उपकरण ,

प्रत्येक उपादान , प्रत्येक व्यापार में उस विराट सत्ता के दर्शन किए हैं रहस्य तथा प्रणय के संकेतों से भरकर प्रकृति उनके समक्ष प्रस्तुत होती है।

निष्कर्ष

महादेवी क्योंकि प्रकृति के प्रत्येक उपकरण , प्रत्येक रूप में उस दिव्य पुरुष के सौंदर्य के ही दर्शन करती है। इसलिए प्रकृति का केाई भी रूप उन्हे विचलित नही करता। उन्ही के अनुसार प्रकृति का शांत रूप जैसे मेरे हृदय में एक चंचल लय सी भर देता है। उसका रौद्र रूप वैसे ही आत्मा को प्रशासंत स्थिरता देता है। अस्थिरता रौद्रता की प्रतिक्रिया ही संभवतः मेरी एकाग्रता का कारण रहती है। निकट आंधी , तूफान , बादल , समुद्र आदि कुछ ऐसे विषय हैं जिनके चित्र अनायास बनते हैं और बना लेने पर स्थायी आनंद प्राप्त होता है। महादेवी ने अपनी व्यक्तिगत प्रणयानुभूति और वेदनाभूति की अभिव्यक्ति के लिए भी प्रकृति का सहारा लिया। जो कुछ वह सीधे - सीधे अप्रत्यक्ष रूप में नही कह सकती थी , प्रकृति का अवरण ले लेने पर वही सब कुछ वह अतयंत सहज सरल ढंग से कह जाती है। महादेवी वर्मा तथा छायावादी कवियों के प्रकृति चित्रण की एक अनूठी विशेषता यह रही कि उन्होंने प्रकृति पर नारी रूप का आरोप किया। वह चाहे प्रसाद हो , सुमित्रानंदन पंत का आरोपण किया। वह चाहे प्रसाद हो , सुमित्रानंदन पंत या फिर निराला - सभी प्रकृति की सुंदरता में किसी स्त्री स्वरूप की कल्पना से बढ़कर और कौन सी कल्पना होगी। महादेवी वर्मा भी इसका अपवाद नही है।

संदर्भ

1. छायावादी काव्य तथा छायावादोत्तर काव्य , पृष्ठ 5
2. आधुनिक काव्य विवेचन मानविकी विद्यापीठ , पृष्ठ 117
3. छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि , सुषमा पॉल
4. महादेवी का काव्य में लालित्य विधान , डॉ . मनोरमा शर्मा साहित्य संस्थान , कानपुर , प्र 0 सं 0 1976
5. छायावाद का काव्य शिल्प , प्रतिमा कृष्ण बल राधा कृष्ण प्रकाशन , दिल्ली 1971
6. आधुनिक हिन्दी कविता , डॉ . नंद किशोर नवल
7. भारतीय नारी की विषम परिस्थितियों पर अनेक दृष्टियों से विचार
8. यात्रा, कला और साहित्य से संबंधित मौलिक विचार
9. "महादेवी का सर्जन : प्रतिरोध और करुणा". तद्भव. मूल (एचटीएमएल) से 22 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 मार्च 2007.
10. (अंग्रेज़ी में). साहित्य अकैडमी. मूल (एचटीएमएल) से 27 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 मार्च 2007.
11. "हिन्दी की सरस्वतीः महादेवी वर्मा". सृजनगाथा. *मूल (एचटीएमएल)* से 5 जुलाई 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 मार्च 2007.